Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 10 | Nov - 2015

ऋषिकेश का धार्मिक पर्यटन-महत्त्व एवं संभावनायें

सुनीता पासवान
शोध छात्रा इतिहास विभाग, प्रो. जे.सी. जोशी, हे.न.ब.रा.वि.वि. श्रीनगर,

सुनीता पासवान

प्रस्तावना:

पर्यटन स्थलों में ऋषिकेश का नाम सर्वोपरि है, इसकी पर्वतीय भौगोलिक स्थिति तथा यहाँ का शुद्ध प्राकृतिक वातावरण है तथा अत्यन्त दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र में स्थिति होने के कारण प्राचीन काल से ही यह ज्ञानी ऋषि-मुनियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है तथा इस क्षेत्र का पर्वतीय में होने से एकान्त ज्ञान-ध्यान में रुचि रखने वाले महापुरुषों ने इस अपनी तपोभूमि के रूप में देखा। यही कारण है कि विभिन्न हिन्दू ग्रंथों ही नहीं वरन् वेद में भी ऋषिकेश का वर्णन मिलता है। कहा जाता है कि इस स्थान पर आज भी कुछ ऐसे दुर्गम क्षेत्र हैं जहाँ अत्यन्त आश्चर्यजनक दृश्य देखने को मिलते हैं। इस प्रकार की बहुत-सी जनश्रुतियों में नाना प्रकार की दंतकथाएँ आज भी प्रचलित हैं; जैसे महाभारत के महान योद्धा द्रोण पुत्र अश्वथामा आज भी भगवान कृष्ण के शापवश यहाँ शांति की खोज में भ्रमण करते दिखायी दे जाते हैं।[1]

यही कारण है कि महापुरुषों की पदरज से गौरवान्वित यह पवित्र स्थल आज हमारी बौद्धिक, आध्यात्मिक क्षमता का विकास केन्द्र होने के साथ ही देश का सर्वोत्कृष्ट पर्यटन स्थल भी है। विश्व के अन्यान्य देशों से प्रतिवर्ष हजारों पर्यटक यहाँ पर्यटन के लिए आते हैं, जिससे भारत को विदेशी मुद्रा के साथ-साथ विदेशी पर्यटकों के आगमन से विभिन्न देशों की संस्कृति सभ्यता व उनके व्यवहार की जानकारी से जनसामान्य का स्वत: ज्ञानवर्द्धन भी होता है। पर्यटन आज भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक व्यवसाय की दृष्टि से देखा जाता है। भारत सरकार ने पर्यटन विकास के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा देश की प्राचीन धरोहरों और सुरम्य प्राकृतिक क्षेत्रों को विदेशी पर्यटकों का स्वागत करने के लिए खोल दिया है।[2] भारतीय संस्कृति में अतिथि सेवा ईश्वर सेवा मानी जाती रही है, ऐसे में देश की अतिथि सेवा परम्परा को बढ़ावा देते हुए आज भी हम विश्व के सभी देशों को भारतीय संस्कृति सभ्यता और ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान करने का सुगम मार्ग प्रशस्त करते हैं।

पर्यटन के इस सुरम्य स्थल पर वर्तमान समय में अनेकों निजी संस्थाएँ और साधु-संतों के निवास से पर्यटकों की भीड़ और भी बढ़ जाती है। इस क्षेत्र में योग-साधना व धार्मिक कार्यक्रम करने वाले आयोजकों ने अपनी पर्याप्त पहुँच बना ली है, जिससे यहाँ विभिन्न व्यवसायों का विकास स्वत: हो गया है। यहाँ खान-पान की व्यवस्था तथा जीवन रक्षक दवाओं की व्यवस्था हेतु विभिन्न चिकित्सक व वैद्यकी पद्धतियों से जुड़े वैद्य जड़ी-बूटियों की खोज व उनके

प्रचार के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन प्रयासों से इस क्षेत्र के विकास के साथ-साथ देशी की सामजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विकास को भी बल मिलने की काफी संभावना नज़र आती है जिससे पर्यटन विकास का मार्ग स्वत: प्रशस्त हो जाता है।

ऋषिकेश चारधाम मार्ग के केन्द्र पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थस्थल हैं। यमुनोत्री ऋषिकेश क्षेत्र पूरे देश ही नहीं बल्कि समस्त विश्व में अपनी आयुर्वेदिक प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और पर्यावरण की शुद्धतम स्थिति के लिए जाना जाता है। वर्तमान समय में पर्यावरणविदों के अनुसार गंगा जल प्रदूषित होने से यहाँ जल प्रदूषण व अन्यान्य मानवीय कारणों से पर्यावरण प्रदूषण दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। ऋषिकेश की भौगोलिक स्थिति, पर्यावरण विशिष्टताओं के परिचय पहले इस नाम की उत्पत्ति पर विचार करना वांछनीय है। जैसा कि भारतीय संस्कृति सभ्यता के सृजनकर्त्ता हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि माने जाते हैं जिनका वेदों-पुराणों और अन्यान्य सनतान ग्रंथों में बार-बार वर्णन आता है, उन्हें आज की दृष्टि में हम महान संत व वैज्ञानिक की संज्ञा दे सकते हैं। संभवत: इन ऋषियों के निवास स्थल होने के कारण ही इसका नाम 'ऋषिकेश'[3] पड़ा। कुछ प्राचीन ग्रंथों में भगवान विष्णु के नाम पर इसका नाम हृशीकेश[4] मिलता है।

ऋषि+कश = अर्थात् ऋषि की चोटी। इस प्रकार पर्वतमाला की चोटी पर स्थित होने के कारण ही इस नाम से यह विख्यात है। हिन्दी भाषा में इसे 'ऋषिकेश' तथा संस्कृत भाषा में 'हृषीकेश' से अभिप्राय 'विष्णु' से लिया जाता है अर्थात् यह भगवान विष्णु 'चेतना के देव' (Lord of senses) के नाम से जाना जाता है। 'हृषी=चेतना, *केश*=स्वामी या मालिक अर्थात् जो *रैभयाऋषि*[5] जिन्होंने तपबल से 'स्कन्दपुराण'[6] में जिन्हें 'कुब्जामार्क'[7] के नाम से जाना गया है।

जैसा कि पर्यटन आदिकाल से ही मानव का प्राकृतिक स्वभाव रहा है। सभ्यता संस्कृति के विकास में इसी पर्यटन का विशेष योगदान था जिससे आज के औपनिवेशिक नगरों महानगरों की स्थापना हुई। हमारा इतिहास इसका ज्वलंत उदाहरण है। आज भी हम इसी आन्तरिक प्रेरणा से विभिन्न जलवायु व विचित्र प्रदेशों की स्थिति व उनके रहस्यों को जानने के लिए लालायित रहते है और यही जिज्ञासा वर्तमान पर्यटन की रीढ़ की हड्डी है। अस्तु दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्यटन मानव ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि के साथ ही मानव हृदय में जीवन के प्रति एक नई जिजीविषा भी पैदा करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन्हीं क्रिया-कलापों से प्रभावित भारत सरकार ने इसके विकास हेतु अन्य विभागों की भाँति पर्यटन मंत्रालय की स्थापना कर इसकी आवश्यकताओं की पूर्ति का सक्षम प्रयास किया है।

इस पावन भूमि पर विभिन्न प्रकार के धर्मों, संस्कृतियों तथा मानव जीवन मूल्यों के विकास ने इसकी वास्तविक छवि अस्त-व्यस्त कर दिया है। अतएव इसक भविष्य को लेकर इसकी नैसर्गिक छटा को यथावत रखने हेतु हमें इसकी समस्याओं का अध्ययन कर उनका निराकरण करना अति आवश्यक हो गया है। प्रस्तुत विषय अपने आप में एक ज्वलंत प्रश्न है। आज के स्वतंत्र परिपेक्ष्य में पुन: अपनी वास्तविक सर्वकल्याणकारी संस्कृति को जागृत करने की आवश्यकता है।

जिस प्रकार प्राणी का शरीर उसकी आत्मा का निवास स्थल होती है, ऐसे में ऋषिकेश को देखकर ऐसा अहसास होता है कि इस क्षेत्र की आत्मा कहीं मन्दिरों में ही बसती है, क्योंकि हर दस कदम पर इनकी छटा बहुतायता से देखी जा सकती है। इतना ही नहीं देश के सभी क्षेत्रों के हिन्दू, सिख मुस्लिम इस स्थान स्वार्गिक आनंद की अनुभूति करते हैं। आज इन स्थलों पर देश की सारी जनता ही नहीं बल्कि पाश्चात्य और यूरोपीय देश के पर्यटक बहुत बड़ी संख्या में आपनी उपस्थिति प्रस्तुत करते रहते है।

ऋषिकेश एक प्राकृतिक क्षेत्र होने के कारण यहाँ की जलवायु मानवीय जीवन ही नहीं बल्कि हर प्रकार के

प्राणियों के लिये जीवनवर्द्धक है। यही कारण है हजरों की संख्या में लोग न केवल यहाँ दर्शनीय स्थल देखने आते हैं बल्कि स्वास्थ्य सुधार हेतु भी लोग ऋषिकेश और देहरादून, मंसूरी जैसे प्राकृतिक क्षेत्रों में डॉक्टरों की राय से जाते हैं। इसी तथ्य को संज्ञान में लेते हुए वर्तमान समय में 'पतंजलि योगपीठ संस्थान' बनाकर योगी रामदेव जी ने भारतीय ऋषि परम्परा का निर्वहन किया है, जिससे आत काफी लोगों को लाभ पहुँचा है। यही नहीं इसी क्रम में वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा 21 जून वर्ष 2015[8] को अंतर्राष्ट्रीय विश्व योग दिवस की घोषणा कर इसमें एक और कड़ी जोड़ दी। इससे यह आभास हो जाता है कि आगे आने वाले भविष्य में ऋषिकेश जैसे स्थल स्वास्थ्य व पर्यटन की दृष्टि से देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान करेंगे। आज की महानगरीय सँकरी गलियों में घुटघुट कर साँस ले रहा विद्यार्थी वर्ग अपने स्वस्थ मस्तिष्क के विकास व जीवन में नई स्फूर्ति पाने के लिए ऐसे प्राकृतिक स्थलों से लाभ उठायेगा।

यहाँ के प्राचीन स्थल भी बहुत पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार है– श्रीभरत मन्दिर, त्रिवेणी घाट स्थित प्राचीन रघुनाथ मन्दिर, प्राचीन काली मन्दिर, बाबा कालीकमली वाला पंचायत क्षेत्र, श्री निर्मल आश्रम, श्री जयराम आश्रम, श्रीमनाकामेश्वर महादेव मन्दिर, श्री स्वामी रामानन्द संत आश्रम, श्यामकुंज आश्रम, तारा माता, मन्दिर, गोपाल मन्दिर, आशामाई धर्मशाला, चित्रकूट अखण्डधाम ट्रस्ट, योगसाधन आश्रम, श्री बनखण्डी महादेव, सिद्ध गणेश मन्दिर, गोपाल कुटि-चित्रगुप्त मन्दिर, भगवान भवन, तोताद्रिमठ तथा बाबा नीमकरौली मन्दिर आदि विख्यात मन्दिर हैं।[9] इनके साथ ही पर्यटकों के आवास हेतु अनेकों धर्मशालाओं का भी निर्माण किया गया है, जिनमें आने वाले पर्यटकों को आसानी से आवास तथा भोजन इत्यादि की व्यवस्थ होती है। राज्य सरकार के अलावा अनेकों निजी संस्थाएँ भी इस प्रयोजन में कार्यरत हैं।

प्राचीन काल से योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। यदि हम वास्तविकता को देखें तो एक नवजात शिशु भी बिना हाथ-पैर हिलाये व झटके अपना भोजन व दूध पचा नहीं पाता।[10] ऐसी क्रिया मानव शरीर विज्ञान के अनुसार एक स्वाभाविक क्रिया है। ऐसे में वयस्क व्यक्ति को भी अपने स्वास्थ्य को अच्छा रखने में योगा यानि शारीरिक श्रम सम्बन्धी क्रियाएँ उन लोगों को लिए और भी आवश्यक है जो अपने दैनिक जीवन में शारीरिक श्रम न करके केवल मानसिक श्रम करते है। भारतीय मनीषियों ने विविध प्रकार की यौगिक क्रियाओं का निर्माण किया है, जिनमें प्रमुख नाम महर्षि पातञ्जलि का आता है। वर्तमान समय में बाबा रामदेव जैसे योगी संतों द्वारा इस कार्य में अपनी पहल करके देश को समृद्ध व सुखी बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। पर्यावरण की शुद्धता व ध्यान क्रियायें हेतु सहज स्थिति को देखते हुए केन्द्र सरकार ने भी देश में खेल, पर्यटन के साथ-साथ योग शिक्षा का भी विकास करने की ओर ध्यान दिया है। इस कार्य के लिये ऋषिकेश की भौगोलिक स्थिति काफी उपयुक्त है। अतः इस क्षेत्र में योगा-कक्षाओं को संचालित कर भावी पीढ़ी को शारीरिक, मानसिक व सांस्कृतिक मेधा से समृद्ध किया जा सकता है। आज की परिस्थिति को देखते हुए योग एक प्रकार से शरीरिक व्याधियों का शमन करने में प्रभावकारी सिद्ध हुई, जिससे आज योगा-कक्षाएँ व व्यायाम शालाओं को स्थापना कर जन सामान्य में योग-शिक्षा के क्षेत्र में नवयुवकों को अपार रोजकार का स्रोत उपलब्ध कराने में भी महत्त्वपूर्ण है। इस तथ्य का आभास 21 जून के अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस से सहज ही लगाया जा सकता है।

विश्व के प्रायः सभी देशों ने अपने प्राचीन सांस्कृतिक धरोहरों पर्यटन विकास हेतु उपयोग किया है। अतः हमारे देश में भी ज्ञान-विज्ञान तथ्य भारतीय संस्कृति की बौद्धिक गरिमा सृजन को सतत बनाये रखने के लिए प्रकृति के इन अनुपम स्थलों के संरक्षण की परम आवश्यकता है। इस क्षेत्र की प्राचीनता के संदर्भ में पर्याप्त जानकारी एकत्र कर इसकी भौगोलिक परिस्थिति व महत्त्व पर विचार करते हुए सामाजिक, आर्थिक जीवन पर पड़ने वाले अच्छे प्रभावों को समझने में मदद मिलेगी। आधुनिक युग में ऋषिकेश की आयुर्वेदिक सम्पदा न विश्व सभी देशों का ध्यान अपनी

ओर आकर्षित किया है।

दुर्लभ जड़ी-बूटियों के उद्‌गम स्थान व उनकी विशेषताओं को जानने में काफी सहायता मिलेगी। अस्त ऋषिकेश के पर्यटन की उपयोगिता केवल इसी बात से सिद्ध हो जाती है कि यह भारतीय प्राचीन परम्परा व ऋषि-मुनियों की तपस्थली होने के कारण अपने आप में सहस्त्रों रहस्य समेटे हुए है, जिनका आधुनिक मानव को जानना अत्यन्त आवश्यक है। यहाँ रहने वाले वरिष्ठ नागरिकों और कुछ दुर्लभ साधु-संतों से संपर्क कर इन विषयों से सम्बन्धित जानकारी आसानी से प्राप्त की जा सकती है। *अत: इस अध्ययन में विभिन्न प्रकार के आधुनिक साधनों का प्रयोग कर आसानी से इसका जीवंत चित्रण समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है। जैसे प्राचीन दुर्लभ आश्रमों, मन्दिरों तथा पर्वतीय क्षेत्र में स्थित गिर-कन्दराओं के ऑडियो-वीडियो चित्रण तथा फोटोग्रॉफी का उपयोग कर इसे भलीभांति जाना व समझा जा सकता है।* ऋषिकेश से सम्बन्धित कुछ ग्रन्थों की खोजकर उनसे इनकी प्राप्त जानकारी को प्रमाणित करने में भी सफलता मिलेगी। अर्थात् ऋषिकेश के अध्ययन से इस प्रदेश के सर्वांगीण विकास व देश की आम जनता तथा शोध-छात्रों को विषय-वस्तु की जानकारी सुलभ होगी। उत्तरांचल क्षेत्र में विभिन्न राजाओं ने शासन किये तथा अपनी प्रतिभा की छाप छोड़ी। आधुनिक साधनों का प्रयोग कर ऋषिकेश की महिमा का जीवंत चित्रण समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया जा सकता है। प्राचीन दुर्लभ आश्रम, मन्दिर, गिरि कन्दराओं को ओडियो, विडियो, चित्रण तथा फोटोग्रॉफी के उपयोग से यह सम्भव है।

इस शोध प्रबन्ध में इसके इतिहास के साथ इन राजाओं तथा उनकी राजव्यवस्थाओं के वर्णन से इस अध्ययन को समृद्धि प्राप्त होगी। इन राजाओं में कत्यूरी वंश, चंद्रवंश, आदि प्रमुख थे, जिनका संक्षिप्त परिचय इस शोध अध्ययन में प्रस्तुत कर इसे विस्तृत आकार दिया जा सकता है जोकि अध्ययन के दृष्टिकोण से अति महत्त्वपूर्ण है।

उत्तरांचल क्षेत्र पर विभिन्न आक्रान्ताओं ने समय-समय पर आक्रमण किये जिनमें गोरखा आक्रमण, किरात राज्य से पाल वंश तक का इतिहास शामिल ह। इन आक्रांताओं से समय-समय पपर यहाँ की सांस्कृतिक विरासत एक राजा से दूसरे राजाओं के हाथों में आती गयी तथा उनके सामाजिक, आर्थिक स्वरूप में तदानुसार परिवर्तन होते रहे। देश स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अब इस क्षेत्र में सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के लिए सरकार ने कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये हैं जिनमें इस क्षेत्र की अमूल्य धरोहरों की सुरक्षा तथा इनके विकास के संसाधनों की आपूर्ति का जिम्मा अपने ऊपर लिया है जिससे इस क्षेत्र में पर्याप्त विकास की संभावना नज़र आने लगी है। केवल ऋषिकेश ही नहीं सम्पूर्ण भारत की स्थिति अभी भी इस प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। यहाँ पर विकसित हुई हिन्दुत्व विरोधी भावनाओं और विदेशी आक्रमणकारियों के धर्मों के विस्तार से भारतीय संस्कृति को काफी धक्का लगा तथा उसका विनाश हुआ है।

ऋषिकेश क्षेत्र अपने मन्दिरों व आश्रमों के लिये विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारत के सभी तीर्थों में इसका स्थान विशेष महत्त्व का है। प्राचीन ऋषियों की धरती व देवभूमि कहे जाने वाले इस क्षेत्र में हिन्दू सनातन धर्म की यात्रा का प्रमुख स्थान "चार धाम" (गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ तथा बद्रीनाथ यहीं स्थित है जहाँ से चार धाम की यात्रा शुरू होती है।

आज वैश्विक ग्लोबलाइजेशन के दौर में पर्यटन लगभग सभी विकसित देशों में आय का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गया है। भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही विविध प्रकार की परम्पराओं द्वारा पर्यटन को बढ़ावा दिया जाता रहा है। मानव जीवन के चार लक्ष्यों में अन्तिक मोक्ष पर्यटन से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। भारतीय संस्कार में तीर्थाटन एक पुण्य कार्य माना गया है। इसमें देश के विभिन्न धार्मिक यात्राओं की यात्रा की जाती रही है। देश के ही नहीं बल्कि विदेशी लोग भी भारतीय पर्यटन की तरफ काफी आकर्षित हैं। इससे सरकार को प्रत्यक्ष विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होने से देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती के साथ हमारी संस्कृति सभ्यता का प्रचार-प्रसार भी विदेशों तक पहुँचता है। भारत में प्रमुख रूप से देश के चारों कोनों मे हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल हैं जिन्हें चार धाम के नाम से

जाना जाता है। इसके अलावा यहाँ कुम्भ मेले का आयोजन भी इन्हीं चार स्थानों पर किया जाता है, जिनमें से "हरिद्वार" प्रमुख है। आज के आधुनिक युग में देश की संस्कृति सभ्यता को प्रसारित करने में पर्यटन की विशेष महत्ता है।

ऋषिकेश भारतीय तीर्थस्थलों में अपनी विशेष महत्ता रखता है। यह हिमालय पर्वत से निकलकर आने वाली पावन गंगा नदी के किनारे स्थित है। यहाँ पर गंगा का अति पावन बर्फीला पानी गर्मी के महीनों में भी काफी ठंडा होता है, जिससे काफी मात्रा में दूर-दूर के तीर्थ यात्री गर्मियों में इस क्षेत्र का तीर्थाटन व पर्यटन को उत्सुक रहते हैं। इसकी महत्ता इसी से स्पष्ट हो जाती है कि यहाँ पर चारों तरफ धार्मिक वातावरण दिखायी देता है तथा इस क्षेत्र में मन्दिरों की बहुतायत संख्या और तीर्थयात्रियों और साधु-संतों से भरा हुआ क्षेत्र स्वयमेव अपने यशोगान का उद्घोष करता है। हिन्दू सनातन धर्म परम्परा के अनेकों महान ऋषि-मुनियों की यह पावन तप:स्थली आज भी बड़े-बड़े सिद्ध संतों की तपोभूमि है। इसकी पवित्रता व शुद्धता आज के प्रदूषण के युग में भी अत्यन्त शुद्ध व निर्मल है। यही कारण है कि विदेशों तक के पर्यटन हरिद्वार, ऋषिकेश की यात्रा करने में अपना सौभाग्य समझते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. वेणीराम अन्थ्वाल, "उत्तराखण्ड का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास", प्रकाशक–सरिता बुक हाउस, 186, गुरु रामदास नगर, लक्ष्मीनगर, दिल्लीं
2. पण्डित ओम (खंडूड़ी), "उत्तराखण्ड-उत्तराञ्चल इतिहास, आदि, मध्य, और वर्तमान", कल्पज पब्लिकेशन, सी-30ए सत्यवती नगर, दिल्ली-110052
3. दिनेश चन्द्र बलूनी, "उत्तराखंड : उत्सव, परम्पराएं एवं रीतिरिवाज", प्रकाश बुक डिपो, बड़ा बाजार, बरेली, उ. प्र., प्रथम संस्करण, 2011
4. किरन 'राज', "ऋषिकेश दर्शनम्", सत्य प्रकाशन, मुजफ्फरनगर, (उ.प्र.)
5. चातक गोविन्द, "भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भ : मध्य हिमालय",
6. नैथानी, "ब्रह्मपुर और सातवीं सदी का उत्तराखंड"
7. आर. बैजवाल, "गढ़वाल हिमालय, इतिहास संस्कृति यात्रा एवं पर्यटन"
8. एस. रावत, "गढ़वाली भाषा और साहित्य की विकास यात्रा"
9. कोटनाला जगदम्बा प्रसाद, "गढ़वाली काव्य का उद्भव विकास एवं वैशिष्ट्य",
10. बाबुलकर मोहनलाल, "गढ़वाली लोक साहित्य की प्रस्तावना",
11. थपलियाल प्रकास, "गोरा साधु (जिम कार्बेट)",
12. एन. नैथानी, हिमालय पथ पर पथारोपण वृत्तांत",
13. उपध्या यू. ईटीएल, "कुमाऊँ की लोकगाथाओं का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन",
14. डबराल शिवप्रसाद, "कुलिन्द जनपद उत्तरांचल–हिमाचल का प्राचीन इतिहास (1. रामायण काल से बुद्ध निर्वाण तक)
15. डबराल शिवप्रसाद, "कुलिन्द जनपद उत्तरांचल–हिमाचल का प्राचीन इतिहास (1. बुद्ध निर्वाण से चौथी शती तक))
16. एव. नौटियाल, "कुमाऊं दर्शन"
17. पाण्डेय वी. आदि, कुमाऊँ दर्शन,
18. कुमाऊँ की लोक कथाएँ, पाण्डेय

19. कुमाऊँ में प्रथ्मागत कानून, थपलियाल प्रकास
20. त्रिपाठी ताराचंद, "मध्य हिमालय भाषाएं लोक और प्राचीन स्थान नाम",
21. डबराल शिवप्रसाद, "प्राग ऐतिहासिक उत्तराखण्ड",
22. डबराल शिवप्रसाद, "शाक्तमत की गाथा-1, मातृदेवी,
23. के.एस. रावत, "टिहरी गढ़वाल (भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य)
24. डबराल शिवप्रसाद, "टिहरी गढ़वाल राज्य का इतिहास-1 राजा सुदर्शनशाह से राजा कीर्तिशाह तक
25. डबराल शिवप्रसाद, "टिहरी गढ़वाल राज्य का इतिहास-2 महाराजा नरेन्द्र शाह से महाराजा मानवेन्द्र शाह तक।"
26. सर्मा डी.डी., "उत्तराखंड के लोकदेवता"
27. उत्तराखण्ड की जनजाति तालछा-मारछा (लोक-साहित्य एवं संस्कृति)